अध्याय 3

संज्ञा

संस्कृत व्याकरण में 'नाम' शब्द के प्रयोग पद के जवना भेद चाहे अर्थ खातिर कइल जाला ठीक ओही अर्थ में भोजपुरी, मैथिली, हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय आर्यभाषा सब के व्याकरण में 'संज्ञा' शब्द प्रचलित बा, बल्कि कवनो पदार्थ के नामवाचक शब्द खातिर 'संज्ञा' शब्द रूढ़ हो गइल बा।

अँग्रेजी में 'संज्ञा' चाहे 'नाम' खातिर 'नाउन' चाहे 'नेम' शब्द के प्रयोग होला जवना के 'नेम ऑफ एनीथिंग' मतलब 'कवनों चीज के नाँव' कह के परिभाषित कइल जाला। दरअसल 'नाउन' चाहे 'नेम' अंगरेजी के एके धातु से बनल बा आ ई दूनो शब्द संस्कृत 'नाम' के ही बदलल रूप ह आ जवना नाम से कवनो वस्तु के सम्यक् ज्ञान-पहचान चाहे बोध होला ओकरे के ओह वस्तु के संज्ञा कहल जाला। सम् आ ज्ञा के मेल से बनल 'संज्ञा' के अर्थ होला ऊ शब्द जवना से कवनो वस्तु के सम्यक् ज्ञान होखे। एह से कवनो वस्तु के नाम खातिर 'संज्ञा' शब्द के प्रयोग तर्कसंगत आ भाषा वैज्ञानिक बा। एह तरह से कवनो वस्तु, व्यक्ति, स्थान, गुण धर्म आदि के बोधक शब्द के संज्ञा कहल जाला। संज्ञा एगो विकारी शब्द ह, जवना के रूप, लिंग आ वचन के अनुसार बदल जाला, जइसे-आदमी, नदी, पहाड़, सीता, सोन, हिमालय, मरजाद, गाज, टाल, बरिआत, पानी, आटा, घाव वगैरह।

संज्ञा के भेद-

संज्ञा के वर्गीकरण के लेके व्याकरण के विद्वान लोग एकमत नइखे। कामता प्रसाद 'गुरु' 'संज्ञा' शब्द से वस्तु आ धर्म के बोध भइला से संज्ञा के दूगो भेद-पदार्थवाचक आ भाववाचक मनले बाड़न। पदार्थवाचक से या त व्यक्ति के बोध होला चाहे जाति के। ऊ दूनो आधारन के मिला के संज्ञा के तीनगो भेद बतवले बाड़न-व्यक्तिवाचक, जातिवाचक आ भाववाचक।

भोजपुरी हिन्दी वगैरह आधुनिक भारतीय आर्य भाषा के व्याकरण जाने वाला लोग अंगरेजी के आधार पर संज्ञा का एह तीनों भेद के अलावे द्रव्यवाचक आ समूहवाचक दूगो आउर भेद मनले बाड़न। एह तरह से संज्ञा के पाँचगो भेद भइल-व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, द्रव्यवाचक आ समूहवाचक। अइसे द्रव्यवाचक आ समूहवाचक संज्ञा-भेद जातिवाचक संज्ञा के उपभेद हवें सँ। नापे, मापे, जोखे आ समूह चाहे समुदाय के बोध करावे वाला पदार्थ सब जाति वाचक संज्ञा के तौलनीय आ समूह चाहे समुदायवाचक प्रकार हवे सँ। एकरा बावजूद एह द्रव्यवाचक आ समूहवाचक संज्ञा-भेद का स्वतंत्र अस्तित्व के मानल अनुचित ना कहाई काहे कि भोजपुरी हिन्दी के व्याकरण जाने वाला लोग एह दूनों संज्ञा के स्वतंत्र भेद मान चुकल बा।

व्यक्तिवाचक संज्ञा

जवना शब्द से कवनो एक व्यक्ति चाहे पदार्थ के बोध होखे, ओकरा के व्यक्तिवाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे-रमेसर, दिनेसर, दीनानाथ, सरजुग, सुनीता, सोनपुर वगैरह। इहँवा 'रमेसर, दिनेसर, दीनानाथ' कहला से

एक एक व्यक्ति के, सरजुग कहला से एगो नदी के आ सोनपुर कहला से एगो जगह के बोध होला। आदमी, जानवर, देश, दिशा, नदी, परबत, गाँव, नगर, दिन, महीना, तीज, तेवहार, किताब वगैरह सब के निजी नाम व्यक्तिवाचक के उदाहरण हवे सँ।

व्यक्तिवाचक नाम प्रायः अर्थहीन होला, जरूरी नइखे कि ओह शब्द से व्यक्ति के धर्म, गुण सूचित होखे, व्यक्तिवाचक नाम व्यक्ति चाहे पदार्थ के पहचान चाहे सूचना खातिर संकेत-मात्र होला। कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञा अर्थवाला होला जइसे-राम, रहीम, करीम वगैरह। बाकिर सार्थको नाम सब के अर्थबोध व्यक्ति में होत होख अइसन बाध्यता ना रहे जइसे-'दीनानाथ दुष्ट आदमी हवें' एह वाक्य में दीनानाथ एगो व्यक्ति के नाम बा जवन दुष्ट बा। इहाँ एह दीनानाथ शब्द के अर्थ 'दीन-गरीब पर दया देखावे' वाला मालिक चाहें स्वामी नइखें।

जातिवाचक संज्ञा

जवना शब्द से एक तरह के अनेक पदार्थन के बोध होखे, ओकरा के जातिवाचक संज्ञा कहल जाला जइसे-आदमी, मरद, मेहरारू, लरिका, लरकी, गाय, बएल, नदी, नहर वगैरह। जवना नाम वाला पदार्थ चाहे आकृति के एक बेरि जान-पहचान के हमनी ओह आकृतिवाला सब पदार्थन के नाम जान-पहचान जाईं, त ओकरे के जातिवाचक नाम चाहे संज्ञा कहल जाला। जेकरा एकबेरि आदमी, मरद, मेहरारू, लरिका, गाय,

बएल वगैरह के संकेत ग्रहण हो जाला ओकरा फेर आउर आदमी मरद, मेहरारू, लरिका, गाय, बएल वगैरह के देख के पहचाने में दिक्कत ना होखे।

समूहवाचक चाहे समुदायवाचक

जवना शब्द से पदार्थन का समूह चाहे समुदाय के बोध होखे, ओकरा के समूहवाचक चाहे समुदायवाचक संज्ञा कहल जाला, जइसे - बरिआत, मेला, गिरोह, झूँड, घउद, गाँज, टाल, बोझा, अँटिया वगैरह।

केतनो बर-बरिआत होखे चाहे मेला होखे, ओकरा में सैकड़न लोग होखे, बाकिर एकर प्रयोग एके वचन में होईं यदि कई गो बरिआत चाहे कईगो मेला के बात होई त बहुवचन में प्रयोग होई।

भाववाचक संज्ञा

जवना शब्द से कवनो वस्तु के गुण, चाहे क्रिया के बोध होला, ओकरा के भाववाचक संज्ञा कहल जाला जइसे-कमजोरी, सीनाजोरी, कामचोरी, गरीबी, अमीरी, लरिकाही, पंडिताई, सेखी, बदमासी, चाल्हाकी, सुनाई, गदहपन, दउड़ल, बइठल, कूदल, सूतल, खाइल, पीअल, जीअल वगैरह।

द्रव्यवाचक संज्ञा

जवना शब्द से नापे-मापे आ तउले वाला पदार्थन के बोध होखे, ओकरा के **'द्रव्यवाचक'** संज्ञा कहल जाला। जइसे-घीव, दूध, दही, लोहा, सोना, चानी, गिलट, आटा, दाल वगैरह। अइसे द्रव्यवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा के ही एगो उपभेद मानल जाले।

समूहवाचक संज्ञा

जवना संज्ञा से पदार्थ चाहे व्यक्ति के समूह के बोध होखे, ओकरा के समूहवाचक संज्ञा कहल जाला जइसे-दाल, गिराह, बरिआत, मेला, गाँज, झुँड वगैरह। समूहवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा के समूह चाहे समुदाय बोधक एगो प्रकार मानल जाला।

भोजपुरी में प्रत्ययन के मेल, वाक्य के प्रसंग आ प्रयोग भेद से संज्ञा के रूप बदल जाला जइसे-

भोजपुरी में जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आ क्रिया के साथे प्रत्ययन के जोड़ के भाववाचक संज्ञा बनावल जाला जइसे-

1. जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा- पंडित-पंडिताई, राजपूत- राजपूतांव, भूमिहार-भूईहारी, गदहा से गदहई/गदहपन, मरद से मरदाही, पशु से पशुता, लरिका-लरिकाही/लरिकपन वगैरह।

2. सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा- आप से अपनापन

3. विशेषण से भाववाचक संज्ञा- गरम-गरमी, नरम-नरमी, विधर्म-विधर्मी, कुकर्म-कुकर्मी, धूर्त-धूर्तई, बहादुर-बहादुरी, गरीब-गरीबी वगैरह।

4. क्रिया में प्रत्यय जोड़ के भाववाचक संज्ञा- सजाव-सजावट, बनाव-बनावट, दउड़ल-दउर, चढ़ल-चढ़ाई, लड़ल-लड़ाई, पढ़ल-पढ़ाई, कहल-सुनल-कहासुनी, बैठल-बइठक, डूबल-डूबकी, ठोकल-ठोकर, बुझल-बुझउवल वगैरह।

भोजपुरी में हिन्दिये जइसन कबो-कबो आ कहीं-कहीं जातिवाचक संज्ञा के प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा जइसन पावल जाला जइसे :- पुरी-जगन्नाथपुरी, देवी-दुर्गा, संवत्-विक्रम संवत्, महावीर-हनुमान वगैरह।

कबो-कबो व्यक्तिवाचक संज्ञा के प्रयोग ओही नाम के सब व्यक्तियन के गुण-धर्म के बोध करावे खातिर कइल जाला। अइसन हालत में व्यक्तिवाचक संज्ञा के प्रयोग जातिवाचक संज्ञा जइसन होखे लागेला। जइसे-खली आज के हनुमान हवें, आज समाज में कईगो रावन बाड़े, जीतन हमरा गाँव के नटवरलाल बा। एह वाक्य में हनुमान, रावन, नटवर लाल व्यक्तिवाचक संज्ञा होइयो के जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त बा, काहे कि इंन्हन से हनुमान, रावन आ नटवरलाल के असाधारण गुण-धर्म के कारण एगो समूह के बोध होता, जवन जातिवाचक से जुड़ल बा।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'संज्ञा' खातिर संस्कृत में कवन शब्द चलेला।

(क) सर्वनाम (ख) आख्यात

(ग) निपात (घ) नाम

2. 'रमेसर' कवना संज्ञा के उदाहरण ह।

(क) व्यक्तिवाचक (ख) जातिवाचक

(ग) समूहवाचक (घ) भाववाचक

3. 'लरिकउवा' संज्ञा के कवन रूप ह।

(क) गुरुतर (ख) गुरु

(ग) सामान्य (घ) विशिष्ट

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संज्ञा के परिभाषा देत ओकरा भेदन के नाम लिखीं।
2. भोजपुरी संज्ञा के तीनों रूपन के बारे में बताईं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. संज्ञा के परिभाषित करत ओकरा भेदन के उदाहरण सहित परिचय दीं।